# दलित साहित्य : स्वरूप एवं महत्त्व

**डॉ. सोनिया दहिया**

एम.ए., पी.एच.डी.

हिन्दी में मुख्यधारा का मिथक अब टूट चुका है, अब इसमें स्त्री विमर्श और दलित विमर्श जैसी मुख्य धाराएँ हैं। दलित साहित्य ने इसमें पिछले वर्षों में अपनी इतनी प्रतिभाशाली उपस्थिति दर्ज कराई है कि अब तथाकथित मुख्यधारा भी दलित विमर्श के संदर्भ में परिभाषित होने लगी है, अब उसे गैर–दलित साहित्य कहा जाने लगा है।

अम्बेडकरवाद को दलित विमर्श का वैचारिक आधार बताते हुए उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा है कि अम्बेडकर का बौद्ध धर्म स्वीकार करना कोई भूल नहीं थी बल्कि दलितों को सत्ता में भागीदारी दिलाने के लिए सुविचारित ढंग से उठाया गया एक राजनैतिक कदम था। उनका मानना है कि दलित लेखकों के बीच जाति के सवाल पर दो धड़े हैं, एक वे जो जातिवाद का विघटन चाहते हैं, दूसरे जो जातिवाद का प्रतिष्ठापन चाहते हैं।

'दलित' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'दल' धातु से हुई। जिसका अर्थ है – फटना, खंडित होना, टूटना, जो दला गया, दबाया गया इत्यादि। 'दलित' का अर्थ कुचला हुआ, दबाया हुआ, नष्ट किया हुआ दिया गया है।[1]

मानक अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश में 'दलित' शब्द के लिए डिप्रेस्ट शब्द ही दिया गया है। जिसका अर्थ है – दबाना, नीचा करना, ठुकराना, विनत करना, नीचे लाना, स्वर नीचा करना, धीमा करना, म्लान करना, दिल तोड़ना।[2]

'दलित' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – गरीब एवं शोषित। ओमप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार, 'दलित शब्द का अर्थ है जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित,

रौंदा हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ, विनिष्ट, मर्दित, पस्तु, हिम्मत, हतोत्साहित, वंचित इत्यादि।[3]

प्रतीक के रूप में दलित शब्द आक्रोश, चीख, वेदना, पीड़ा, चुभन, घुटन और छटपटाहट का प्रतीक है। दलित शब्द आधुनिक काल की देन है। लेकिन भारत में दलित की उत्पत्ति बहुत प्राचीन है। भारत के प्राचीन इतिहास में शुद्र, दास, दस्यु, चांडाल, अन्तज्य, अस्पृश्य शब्दों का प्रयोग मिलता है। ये सभी शब्द दलित शब्द के प्राचीन रूप हैं।

किशोर कुणाल ने शायराना अंदाज में दलित को परिभाषित किया है – 'अंगूठा जिसका दान, पुरुषार्थ जिसका धनुषबान और अपमान जिसका प्रतिमान रहा है वह दलित है।'[4] दलित का सामान्य अर्थ होता है – दबा या दबाया हुआ। इसमें अभाव, कमजोरी, विपत्ति की नियति और हीनता का भाव झलकता है। दलित अर्थात् जो सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से कमजोर हो।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दलित शब्द से अनेक प्रकार का बोध होता है जैसे – दुःख का बोध, अपमान का बोध, दैन्य, दासत्व का बोध, जाति–वर्ग का बोध और क्रान्ति का बोध। दलित शब्द आक्रोश, प्रहार और क्रांति का प्रतीक है और 'दलित' एक सामाजिक अवधारणा है, जबकि दमित एक राजनैतिक अवधारणा है और शोषित, एक आर्थिक अवधारणा है। शोषित कोई भी हो सकता है। दलित ही शोषित हो, यह आवश्यक नहीं, गैर दलित भी शोषित, दास हो सकता है। अतः यही दलित अवधारणा है।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य में तद्युगीन समाज का प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक स्थिति किसी–न–किसी रूप में परिलक्षित होती है। उसमें सामाजिक जीवन, व्यवस्था, सामाजिक समस्या तथा उस पर उपायों की चर्चा होती है। जाति–व्यवस्था, मानवीय असमानता, शोषण के प्रति विद्रोह इत्यादि स्थितियों को चित्रित करने वाला साहित्य, समाजवादी समाज रचना एवं प्रगतिवादी चेतना से

प्रभावित है। वर्तमान समय में नारी विमर्श और दलित विमर्श बहुचर्चित विषय हैं। वर्तमान में ही नहीं अपितु महात्मा फूले, शाहू, अम्बेडकर जैसे समाज सुधारकों ने भी सामाजिक व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। शोषित, अपमानित दलित अस्मिता, अधिकार की रक्षा के लिए संघर्ष करने लगा।

सामान्यतः दलित समाज के जीवन से जुड़ी रचना – 'दलित साहित्य'। जाति–व्यवस्था को नकारने वाला, शोषित मानव की व्यथा बताने वाला साहित्य 'दलित साहित्य', दबे कुचले लोगों की वाणी दलित साहित्य, विद्रोही, संघर्षरत मानव की आत्मवेदना दलित साहित्य है। दलित द्वारा लिखी गई दलितों की मर्मवेदना को दलित साहित्य माना गया है। इसके विपरीत गैर दलितों द्वारा परानुभूति के बल पर शोषित मानव का किया अंकन भी दलित साहित्य ही है।

दलित साहित्य जैसे आन्दोलन को समझने के लिए और उसकी सही पहचान करने के लिए इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों पर विचार करना अनिवार्य है क्योंकि 'दलित' के विषय में लोगों की जो अवधारणा है, दलित उससे भिन्न हैं। दलित साहित्य स्थापित साहित्य से विद्रोह करता हुआ प्रतीत होता है, वह समाज में अपनी स्वतंत्र अस्मिता की तलाश करता हुआ नजर आता है, अपने अस्तित्व को खोजता है। दलित साहित्य हिन्दी साहित्य का प्रति साहित्य है। इस धारा का विकास नकार आक्रोश और विद्रोह के त्रिकोण पर हुआ है। सर्वप्रथम दलित साहित्य शब्द का प्रयोग डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने सर्वप्रथम दलित साहित्य सेवक संघ में किया। बाद में दलितों के उत्थान और दलितों की समस्याओं के संबंध में जो कुछ लिखा गया दलित साहित्य कहा गया।[5] दलित साहित्यकारों के अनुसार दलित साहित्य दलित अनुभवों की अमूल्य निधि है। दलित साहित्य को व्यापक रूप से परिभाषित करते हुए प्रसिद्ध दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि कहते हैं – 'दलित साहित्य का बिन्दु विवेकहीन नहीं है बल्कि उसकी अन्तः चेतना का हिस्सा है जो समकालीनता की अवधारणाओं को दृढ़ता प्रदान करता है। वह जड़ता के विरूद्ध समय की जरूरत के साथ प्रतिबद्धता और बदलाव की प्रक्रिया के

प्रति सचेत है। इसलिए एक नई चेतना का उन्मेष दलित साहित्य की अवधारणाओं का विशिष्ट अंग है। इसी आधार पर दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र विकसित हो रहा है।[6]

जाति–व्यवस्था का विरोध करते हुए हिराडोम, रैदास, कबीर जैसे भक्तों, कवियों ने अपनी बोली में रचनाएँ लिखी। महात्मा फूले, शाहू, अंबेडकर जैसे समाज सुधारकों ने समाज–व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया। शोषित, अपमानित दलित अपनी अस्मिता और अधिकार के लिए संघर्ष करने लगा। महाड़ आन्दोलन, मिर्चपुर कांड, कालाराम मंदिर प्रवेश, मनुस्मृति जलाना, माणगांव परिषद् दलित छात्रावास एवं आरक्षण सुविधा आदि इसके प्रमाण है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार से दलित अपनी व्यथा, चिंता एवं अपनी स्थिति को शब्द बद्ध करने लगा और इस प्रकार साहित्य का सृजन आरंभ हुआ। हजारों बरसों से दबी भावधाराएँ, लावा बनकर भ्रष्ट व्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए कार्यरत हैं, समता, समानता, बंधुता का प्रचारक साहित्यकार समाज तथा सामाजिक अस्मिता से जुड़ा रहा। दलित साहित्यकारों ने सबसे पहले मनुष्यत्व, मानव की खोज की है।

साहित्य की यह परम्परा इतनी दृढ़ रही कि मध्ययुग के भक्तिकाल में रैदास और दादू आदि निम्न वर्गों में जन्मे कवि रचनाकार भी आये। किन्तु वे वही गाते कहते रहे जो उच्चवर्गीय रचनाकार गाते कहते आये थे, इस स्थिति में मुक्त हो पाना अत्यंत कठिन था, हिन्दी में कबीर ने एक विद्रोहात्मक टेर लगाई अवश्य, किन्तु उनकी वाणी भी रहस्य के झिलमिल झरोखे में सिमटकर रह गई। दलित साहित्यकार ऐसे ही अनेक बातें करता है। स्थापित साहित्य के विज्ञान से वह इनकार नहीं करता किन्तु वहॉ विज्ञान इतना कम है कि मोटे तौर से देखने पर ऐसा लगता है कि 'दलित साहित्य' स्थापित से सम्पूर्ण विद्रोह करता है।

सत्य तो यह है कि यातना ग्रस्त व्यक्ति को चीखने से कोई नहीं रोक सकता और दलित साहित्य एक स्तर पर यातना से पैदा हुई उस चीख का ही साहित्य है। दलित साहित्य का केंद्र बिन्दु मनुष्य है। मनुष्य की मुक्ति उसको

महानता और महत्त्व देने के लिए, उसके उत्कर्ष के लिए, समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व तथा सभी तरह के भेदभाव मिटाने एवं जन जागरण, जनचेतना पैदा करने के लिए दलित साहित्य हथियार की तरह प्रयोग हो रहा है। रमणिका गुप्ता का मानना है कि – दलित साहित्य परंपरावादी साहित्य के लिजलिजेपन और बासीपन तथा एक रूपी रसवादी प्रणाली से भिन्न है इसके दायरे में अंधविश्वास, भाग्य, धर्म–कर्म या भगवान नहीं आते।[7] इसी वैचारिकता पर आधारित मार्क्सवादी साहित्य, जनवादी साहित्य, नीग्रो साहित्य भी खड़ा है। 'आर्थिक और राजनीतिक विचार क्रान्तिकारी रहने पर भी रक्त में मिले संस्कार मिट नहीं पाते, पौराणिकता छूटती नहीं। वर्ण–वर्ग के बन्धन टूटते नहीं। इसलिए यथास्थितिवादी बुद्धिजीवियों और प्रगतिशील बुद्धिजीवियों की साहित्यिक अभिव्यक्तियों में अधिक अन्तर नहीं आता। इसका कारण यह है कि दोनों की मानसिक गठन की पार्श्वभूमि एक सी होती है।

दलित साहित्यकार उन वर्गों से आये हैं, जिन्हें हम व्यापक रूप में दलित कह सकते हैं। और इसलिए उनकी सोच कहीं, किसी स्तर पर रूढ़िवादी यथास्थितिवादी नहीं है, यथा–स्थिति उनके विरूद्ध रही है और उसकी स्वीकृति उनके निजी स्वार्थों पर हमला करती है, अतएव वे एक स्वाभाविक प्रक्रिया से यथास्थितिवाद और पुरातनवाद का विरोध करते हैं, प्रकारांतर से यह उनका सहज धार्मिक कार्य हो जाता है। दलित साहित्य का इष्ट सम्पूर्ण दलित महासमुदाय का सम्पूर्ण उद्धार करना है। यह दलित महासमुदाय वर्ण वैमनस्य की ही पैदाइश है। इसलिए यह वर्ण वैमनस्य नहीं, वर्ण का खात्मा चाहता है, वह शूद्रों, अतिशूद्रों के सुदृढ़ होने की कल्पना नहीं करता, बल्कि शूद्रत्व के सम्पूर्ण संहार की कल्पना करता है फिर उसकी नजर में यह भी है कि शूद्रत्व का खात्मा नहीं हो सकता, इसलिए वह एक साथ उन तत्त्वों पर हमला करता है जो इस वर्णत्व को जिन्दा रखे हुए हैं।

सच्चा दलित साहित्य यथार्थ की अनुभूति पर परखा जाता है, खरा उतरता है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक समता की बात करता है। डॉ. रघुवीर सिंह ने

कहा है – 'यह वह साहित्य है जो लावा है जो हजारों वर्षों से सुसुप्त था, आज भयंकर लावा के रूप में व्यवस्था को तहस–नहस करने को उतारू है।[8] माताप्रसाद गुप्त ने दलित साहित्य को केवल दलितों का लेखन नहीं बल्कि पीड़ा की सशक्त अभिव्यक्ति कहा है।[9] दलित साहित्य का संबंध आर्थिक शोषण से जोड़ते हुए डॉ. विमल कीर्ति ने लिखा है – 'दलित साहित्य जाति–भेद, धार्मिक, आर्थिक शोषण तथा गैरबराबरी के खिलाफ भी है। फुले–अम्बेडकरवादी साहित्य को दलित साहित्य कहा जाता है।[10] दलित साहित्यिक बिरादरी के अनुसार 'सनातन रुढ़ियों के विरूद्ध परंपरा एवं जाति के विरूद्ध लिखा साहित्य दलित साहित्य है।[11]

सत्य तो यह है कि जब दलित साहित्यकार वास्तविक जमीन पर रहकर, अनुभव की प्रामाणिकता के साथ आत्मा की आवाज सुनकर साहित्य सृजन करेगा तब वह श्रेष्ठ दलित साहित्य होगा। आज 'दलित' शब्द व्यापक विस्तृत बना है परिणामतः दलित साहित्य का स्वरूप विस्तृत हो गया है। शोषित, उपेक्षित, अपमानित व्यक्ति की कथा यह साहित्य है। सच तो यह है कि आज के साहित्य सौंदर्य, भाषा–शिल्प की कसौटी पर इसे कसना उचित नहीं है। मानव मुक्ति का उद्घोष दलित साहित्य माना है। दलित साहित्य का अपना अलग सौंदर्यशास्त्र है, जिसका केन्द्र मानव, मानवता, समानता है, भाव प्रधान आत्मतत्व है। किसान, भूमिहीन, अंत्यज, अछूत, विधवा, मजदूर, वेश्या, अस्पृश्य, अनुसूचित जाति, नारी, भंगी, चमार, मरार की जीवन कथा, शोषण की व्यथा दलित साहित्य ही है।

अबला को सबला बनानेवाला, शोषित को मुक्तिदेनेवाला, अपमानित को सम्मान दिलानेवाला, मूक को वाणी देने वाला, निम्न को ऊँचा स्तर पर बिठाने वाला, अनंत मानव का साहित्य, दलित साहित्य है। भेदभाव रहित समाज का निर्माण करने वाला यह साहित्य आधुनिक युग की देन है। अंबेडकरी विचार से प्रभावित यह साहित्य आज नई व्यवस्था का प्रेरणा स्रोत है। परंपरागत नैतिक, धार्मिक, पाखंडी मान्यता को हटाने वाले नए साहित्य का यह रूप है। दलित साहित्य मानवता का पक्षधर होने के साथ समता का प्रचारक है। जाति को ध्वस्त

करके मानव समाज का निर्माण करनेवाला प्रगतिवादी, समाजवादी विचारों का प्रतिपादक है। काल्पनिकता की अपेक्षा यथार्थ की भूमि पर खरा उतरने वाला मानवी मन का सच्चा प्रेमी, आत्मा की आवाज 'दलित साहित्य' है। यह विशिष्ट जाति, पंथ, धर्म का न होकर समस्त शोषित, पीड़ित उपेक्षित, शापित मानव का साहित्य–वृद्ध साहित्य है।

## संदर्भ सूची


1. डॉ. हरदेव बाहरी : राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृ. 386
2. डॉ. नरेन्द्र सिंह : 'दलितों के रुपांतरण की प्रक्रिया, पृ. 7
3. ओमप्रकाश वाल्मीकि : दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृ. 13
4. किशोर कुणाल : 'दलित समाज आज की चुनौतियॉ, भूमिका
5. डॉ. सुनीता साखरे : 'हिन्दी और मराठी दलित साहित्य', पृ.16
6. रमणिका गुप्ता : 'दलित साहित्य सृजन के संदर्भ', पृ. 19
7. ओमप्रकाश वाल्मीकि : 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र', पृ.73
8. रघुवीर सिंह : 'डॉ. अम्बेडकर और दलित चेतना', पृ. 7
9. संपा. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी : 'हिन्दी दलित साहित्य रचना और विचार', पृ. 11
10. प्रज्ञा साहित्य : 'दलित चेतना विशेषांक', पृ. 34
11. डॉ. मुन्ना तिवारी : 'दलित चेतना और समकालीन हिन्दी उपन्यास, पृ. 36